चेतन–बोध प्रकाश–

कवि कृष्णदास ग्रंथावली

सं. डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर

अनुक्रमणिका

भूमिका

अध्याय 1 : कवि कृष्णदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 9
जन्म एवं माता-पिता, शिक्षा
विवाह एवं परिवार, व्यवसाय
सम्मान
कबीर के अनुयायी कवि कृष्णदास
गुरु, शिष्य
व्यक्तित्व - विनम्रता की पराकाष्ठा
कृतित्व - संत कबीरदास, डॉ. अम्बेडकर प्रकाश,
सेठ ताराचंद, फुटकल रागणियां

अध्याय 2 : श्रम के उपासक कवि कृष्णदास 21

अध्याय 3 : जाति : एक सामाजिक छल 24

अध्याय 4 : कवि कृष्णदास के निर्वर्ण राम 30

अध्याय 5 : परिवार, समाज और युगबोध का कवि : कवि कृष्णदास 36
स्त्री विषयक दृष्टिकोण
स्त्री-पुरुष : एक समान
जातकर्म विरोधी
सत्य आचरण
कविता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

अध्याय 6 : विवेक-विचार एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण : कवि कृष्णदास 47
स्वनिरीक्षण
बाहरी आड़म्बरों का विरोध
अधिकार एवं संघर्ष चेतना

अध्याय 7 : धर्म : विशुद्ध मानवी-अस्मिता रूप 55

कवि कृष्णदास ग्रंथावली 86

विविधमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार : कवि कृष्णदास
- डॉ. विजेन्द्र कुमार 340

विविधमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार : कवि कृष्णदास

- डॉ. बिजेन्द्र कुमार,
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
आर.के.एस.डी. कॉलेज कैथल, हरियाणा

कबीर पंथ के पारख संप्रदाय में संबंध रखने वाले कवि कृष्णदास जी विविधमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। उनका साहित्य अपने अन्दर समाज के विभिन्न पहलुओं को समाहित किए हुए है। उनकी लेखनी निष्पक्ष भाव से मानव के कल्याण के लिए चलती रहती है। संस्कृति, राजनीति, धर्म, नैतिकता, अर्थ आदि के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर एक उच्च कोटि के मानव का निर्माण करना ही इनके काव्य का लक्ष्य रहा है। जिस कारण संस्कार, स्वास्थ्य, विवेक, मानवता, गुरु की महिमा जैसे उत्कृष्ट विषयों को इनके काव्य में स्थान मिला, जिनको अपनाकर मानव एक सभ्य एवं संस्कारी समाज का निर्माण करता है। यही कारण है कि ये एक मानवतावादी एवं समाजवादी कवि है। जो राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए एक स्वस्थ, मानव हितकारी वातावरण देता है जिसमें सभी सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

कवि कृष्णदास जी का मानना है कि सबसे पहले हमारे अन्दर उच्च कोटि के संस्कारों का होना जरूरी है ताकि एक संस्कारी समाज का निर्माण हो। हम संस्कारों को धारण करके ही विनम्र संवेदनशील, आज्ञाकारी, सुसंस्कृत तथा विद्वान बन सकते हैं। इन संस्कारों में सबसे पहला संस्कार है प्रातःकाल में जल्दी उठकर माता-पिता और गुरु के चरण स्पर्श करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करना, उनके आशीष में जो ताकत है वह किसी और में नहीं, इसके द्वारा ही हम अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं -

ब्रह्म मुहूर्त जो नर जागे, आलस-रोग दूर सब भागे।
माता-पिता गुरु चरण लागे, कृष्ण सदा रहता है आगे।

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि इस संसार में सबसे श्रेष्ठ माता-पिता और गुरु ही हैं, जिनसे ज्ञान और आशीर्वाद प्राप्त कर हम बड़े से बड़ा मुकाम हासिल कर सकते हैं। इसलिए इनको नमन करना हमारा पहला संस्कार है। कवि इसी बात पर

पुस्तक प्राप्ति का स्थान :
प्रियव्रत रोहणा सुपुत्र कवि कृष्णदास रोहणा
वार्ड नं. 4, दिल्ली रोड,
जे. बी. एच. पब्लिक स्कूल के सामने,
खरखौदा जिला सोनीपत-134102 हरियाणा
मो. 94162-33453, 99917-23913

ISBN-978-93-82189-72-5

अर्पित पब्लिकेशन्स
अक्षरधाम', गुरु तेग बहादुर कालोनी
कैथल- 136027 (हरियाणा)
e mail : arpitpublications@gmail.com
फोन : 09215297365, 8168804346

मूल्य : 400.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2019
© कवि कृष्णदास रोहणा

Kavi Krishandass Granthavali (Poems) by Dr. Rajender Badguzar ₹ 400.00

मुद्रक : सुकीर्ति प्रिंटर्ज़, करनाल रोड, कैथल-136027

ISHWAR SINGH
Member of Parliament
Rajya Sabha
Member: Standing Committee on Railway
Consultative Committee on H.R.D.
Central Taxes Advisory Committee

सत्यमेव जयते

South Avenue
New Delhi-110011
Tel.: 011-23794469
Mobile: 09306181309

संदेश

समाज में चेतना जगाता साहित्य समाज का आइना है। साहित्य एवं संस्कार दिए बिना सुविधाएं देना पतन का कारण है, यह संदेश भी हमें साहित्य से प्राप्त हुआ है। साहित्य बेजुबानों की जुबान है। सभ्य समाज, सभ्य इंसान एवं सभ्य नागरिक की पहचान उसके चरित्र से ही परखी जाती है। तहज़ीब का दरवाजा साहित्य से होकर खुलता है। साहित्य के बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। सांग, नाटक एवं प्रदर्शनी से हमारे भाव परखे जाते हैं। जब गुज़रे ज़माने में केवल मात्र सांग ही एकमात्र मनोरंजन का साधन था तो ग्रामीण आंचल में रहने वाले लोग सांग के माध्यम से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करते थे।

कबीर और सद्गुरु रविदास ने अपने समय में समाज में एकता लाने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने निम्न जातियों और वर्गों में जन्में लोगों को स्वाभिमान से जीने की सीख दी तथा जातिवादियों और वर्ण-व्यवस्था के समर्थकों को तार्किक आधार पर लताड़ लगाई। भारतीय समाज में संतों का साहित्य साहित्य का लोकतंत्र है।

कवि कृष्णदास हरियाणा के संत साहित्य में अत्याधुनिक रूप में हमारे समक्ष हैं। उन्होंने सांग भी रचे हैं, लेकिन जितना वे दोहों, चौपाइयों, सोरठों और कुंडलिया में स्पष्ट अभिव्यक्ति कर पाए, उतनी सांगों और रागणियों में नहीं। छंद पर उनकी जबरदस्त पकड़ है। उनकी वाणी में आधुनिक समाज में व्याप्त कुरीतियों, आडंबरों और सामाजिक बुराइयों के समाधान दिखाई देते हैं। इससे हमें संत-साहित्य की सामाजिक उपयोगिता की अपरिहार्यता अपने आप स्पष्ट हो जाती है। साहित्य में घर, परिवार, गृहस्थी और समाज के प्रश्न नहीं हैं तो फिर वह साहित्य ही नहीं है।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि कवि कृष्णदास दीर्घायु हों उनके दोहे-चौपाइयां समाज का मार्ग प्रशस्त करते रहें।

डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर को भी मेरा स्नेह है जो हरियाणा के वंचित और दलित समाज में जन्में कवियों को संपादित कर उन्हें मुख्य धारा से जोड़ रहे हैं। मैं आशा करता हूं कि वे अपने मिशन में पूरी तरह कामयाब हों और साहित्य के मामले में हरियाणा की सेवा करते रहें।

Permanent Address: House No. 70, Sector 13, Kurukshetra. Tel: 94160 35784, 225800
e-mail: ishwarsinghkkr@gmail.com